अन्धा शिकारी

लेखन व चित्रांकन: क्रिस्टीना रोडानस

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

उस अफ्रीकी गाँव के बाशिन्दे चीरोबो को एक अक्लमन्द और रहमदिल इन्सान मानते थे। वे उससे सलाह लेने जाते और उनके बच्चे उससे किस्से सुनने। एक दिन चिरोबो एक दूसरे गाँव के अजनबी के साथ शिकार करने जाता है। हालांकि उसे आँखों से कुछ दिखाई नहीं देता था, चीरोबो ने उस अजनबी को दिखा दिया कि वह "अपने कानों से देख सकता है", "अपनी नाक से देख सकता है" और "अपनी चमड़ी से देख सकता है"। पर जब अजनबी उसे छलता है, चीरोबो उसे एक बेहद ज़रूरी पाठ पढ़ाता है, यह कि माफ़ दिल से किया जाता है।

अन्धा शिकारी
लेखन व चित्रांकन: क्रिस्टीना रोडानस
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरे माता-पिता के लिए, जिन्होंने दिल से देखना सीखा था।

टैरेफ कर्स-मैकमिलिन को विशेष आभार।

क्रिस्टीना रोडानस
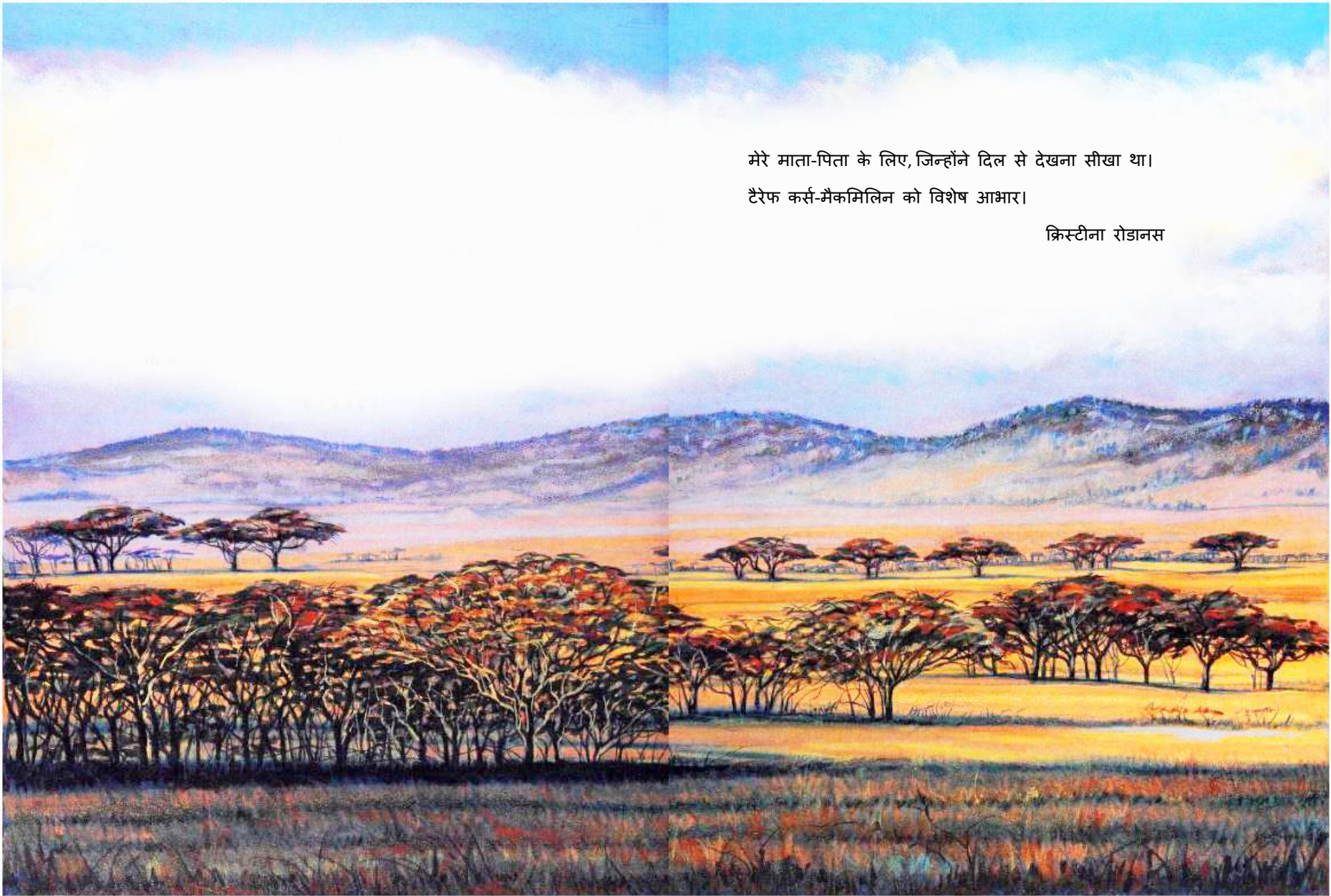
लेखिका की टिप्पणी

अन्धा शिकारी एलैक्ज़ैण्डर मैकाल स्मिथ की अफ्रीकी लोक-कथाओं के संकलन *चिल्ड्रन ऑफ वैक्स* (इन्टरलिंक बुक्स) से प्रेरित है।

यह कथा अफ्रीका के दक्षिणी संभाग की है। इसके किरदारों के नाम शोना भाषा से लिए गए हैं। चीरोबो का मतलब 'दमदार वक्ता' होता है और मूटेये शब्द "जाल में जानवरों को पकड़ना' से बना है।

उम्मीद करती हूँ कि कथा का महत्वपूर्ण व सामयिक संदेश अनेक संस्कृतियों के बच्चे सुन व समझ सकेंगे।

- क्रिस्टीना रोडानस
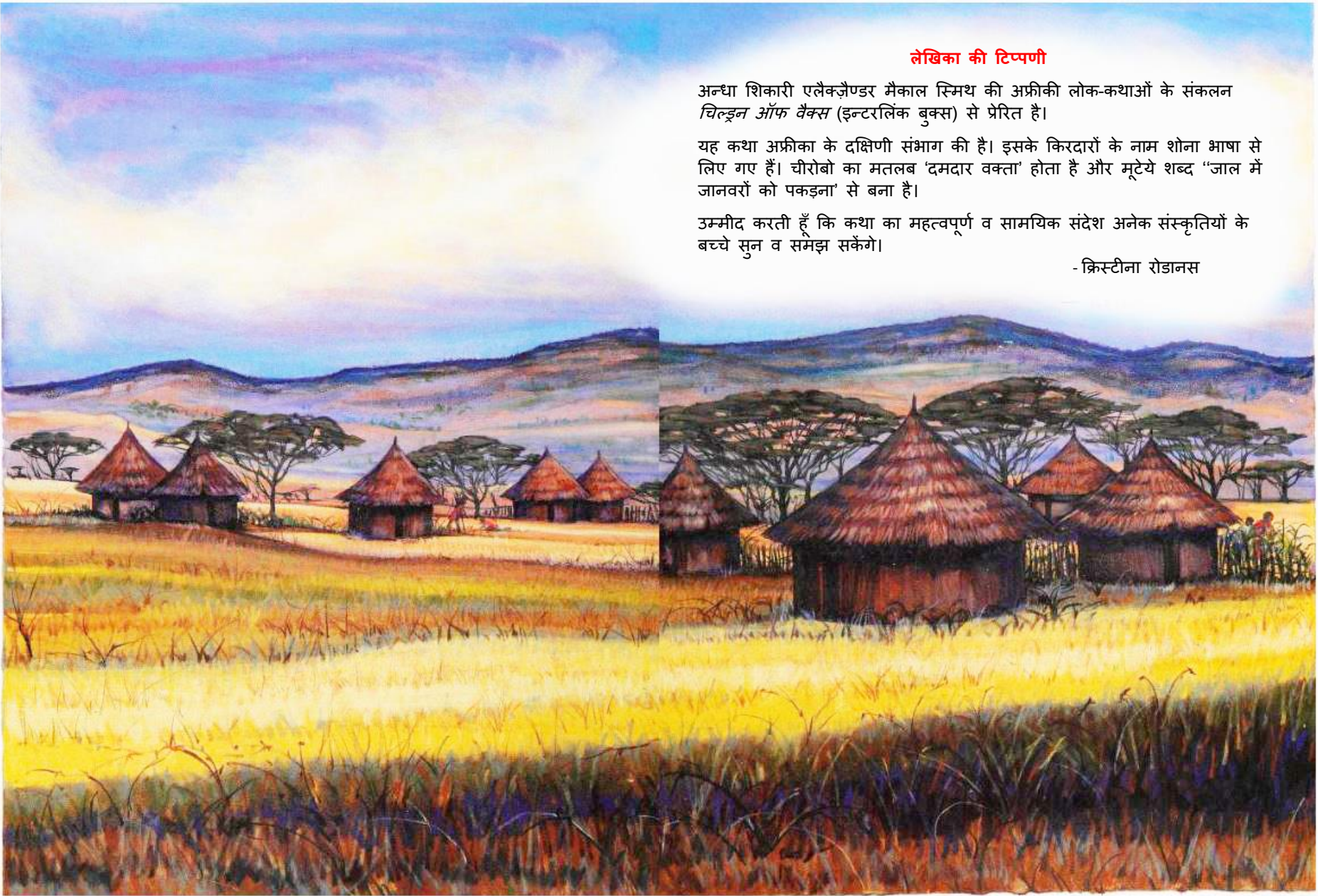
आज से कुछ ही वर्षों पहले अफ्रीका में चीरोबो नाम का एक आदमी गोल झोपड़ियों वाले गाँव में, निपट अकेले रहता था। वह हर दिन अपने बाग में काम करने जाता। कतारों में लगे सूरजमुखी के फूलों, कद्दुओं और मक्के की बड़ी सावधानी से देखभाल करता। काम करते वक़्त वह मीठे गीत गाता। रंग-बिरंगे पाखी पेड़ों से निकल उड़ आते ताकि उसे गाते सुन सकें।
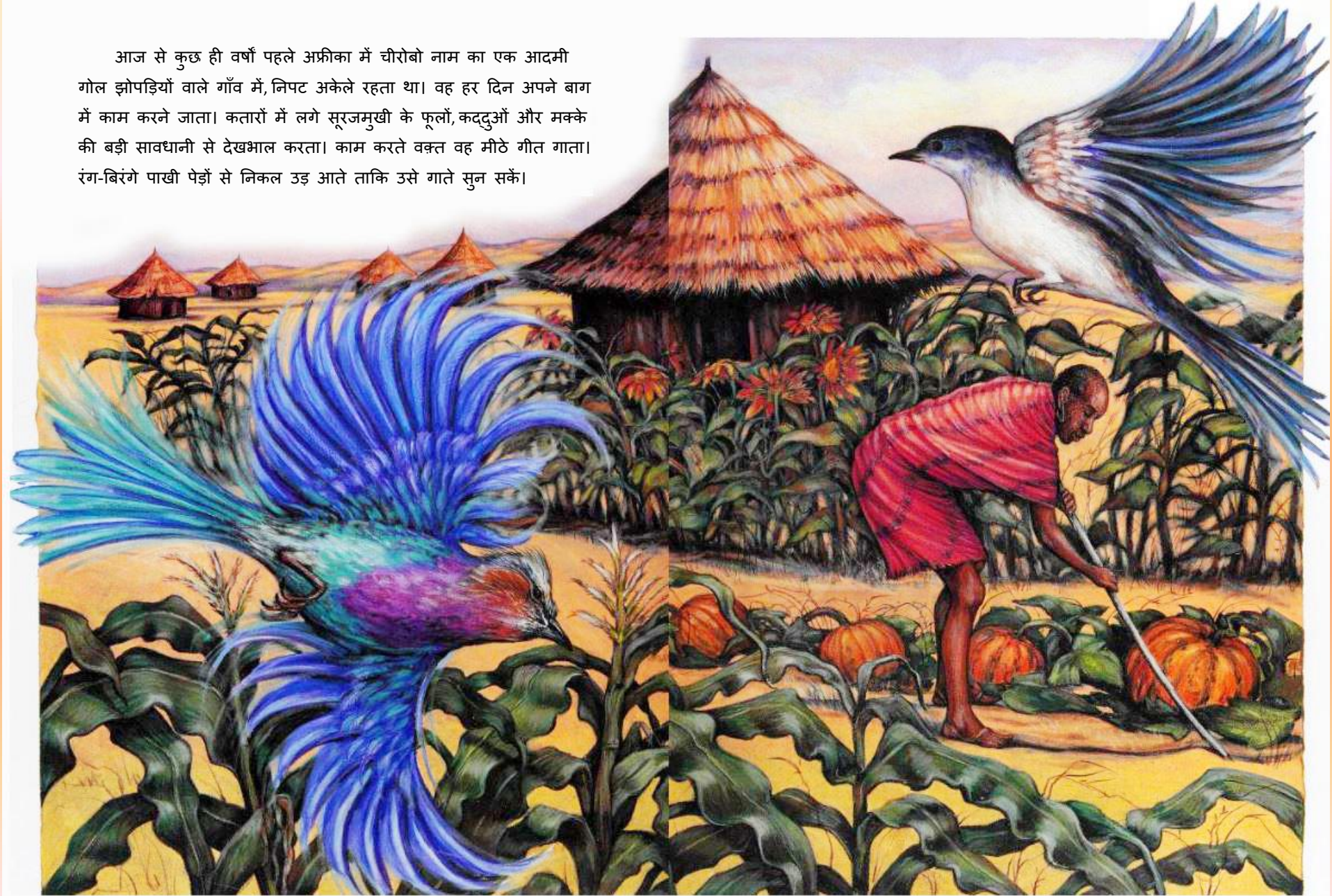
चीरोबो अक्लमन्द माना जाता था। लोग अक्सर उससे सवाल पूछने आते थे, क्योंकि कहा जाता था कि वह कभी गलत नहीं होता। जब बच्चे उससे मिलने आते वह जो कुछ कर रहा होता उसे छोड़ देता और उनके साथ हंसता, उनके किस्से सुनता।

गाँव के सभी लोग गर्मजोशी से मुस्कुराने वाल इस रहमदिल इन्सान को पसन्द करते थे। इतना कि कोई इस बात पर ग़ौर ही नहीं करता कि वह अन्धा है।
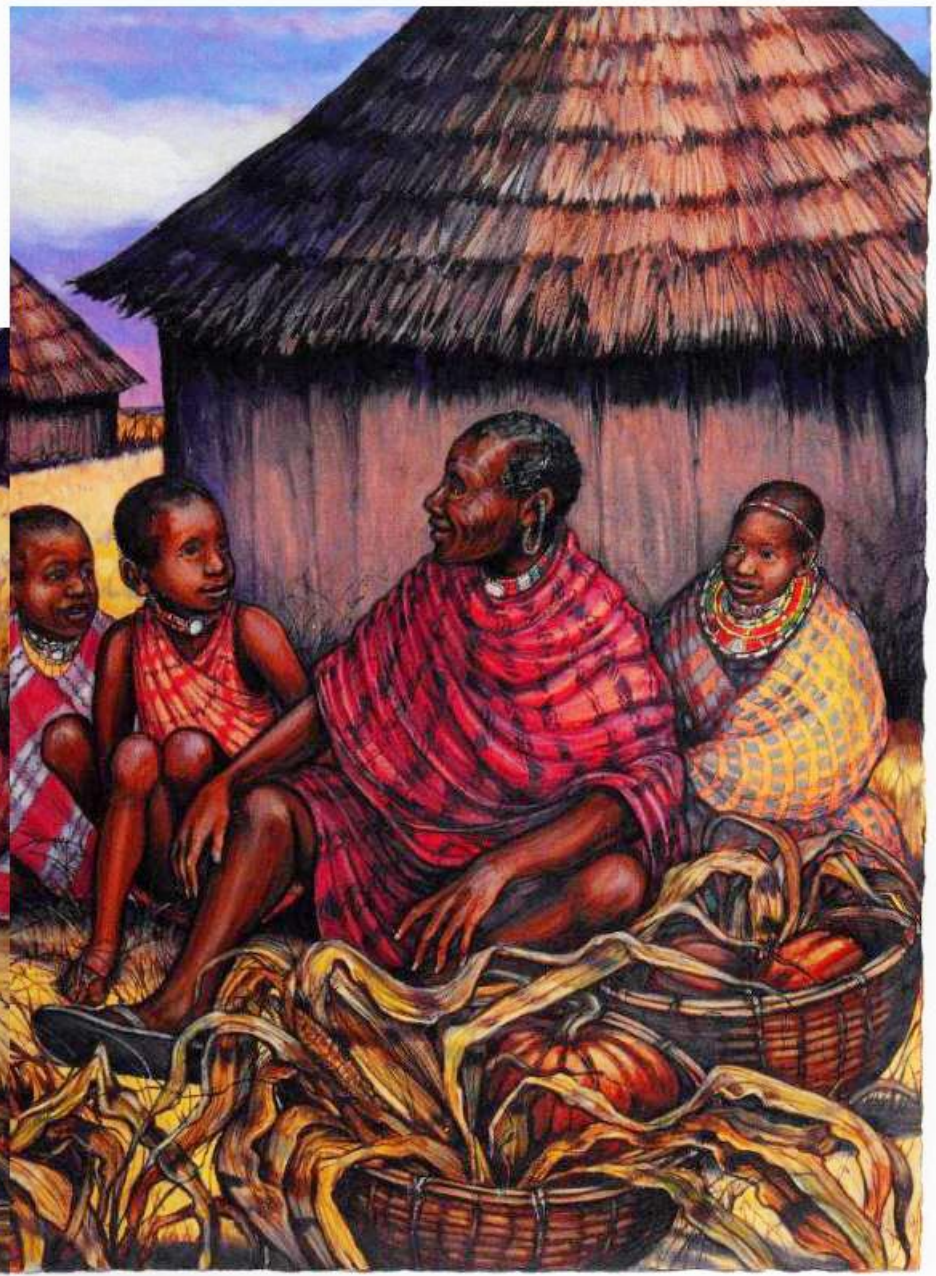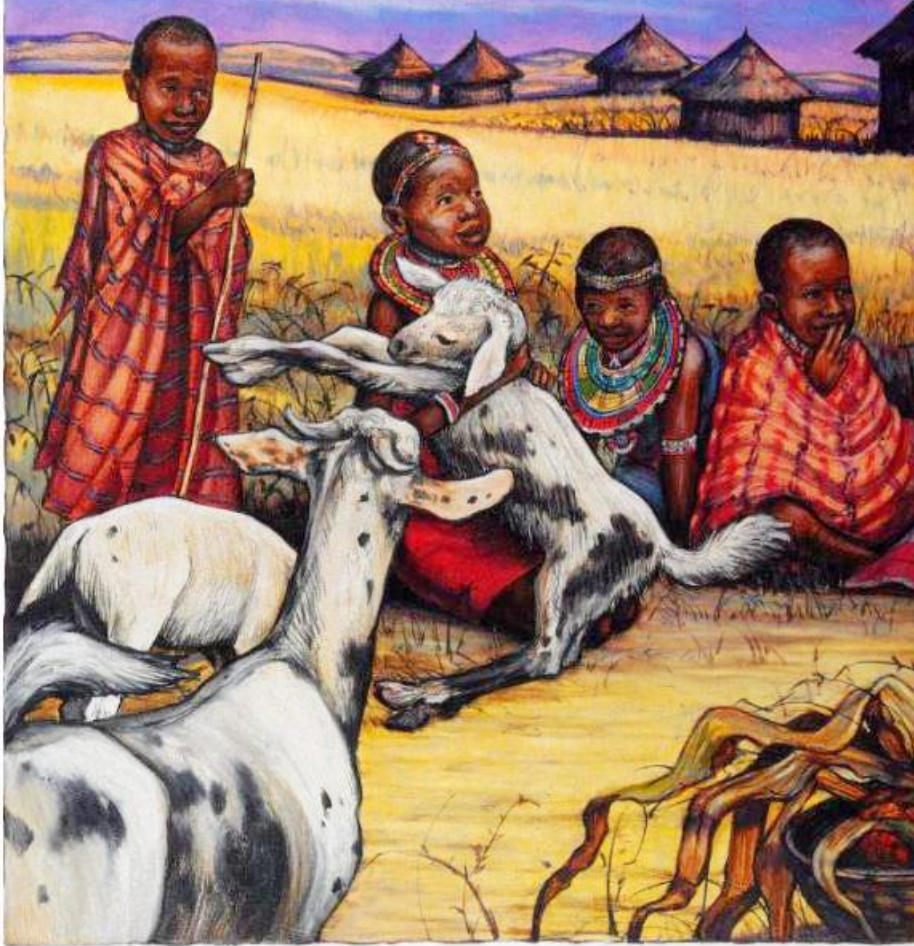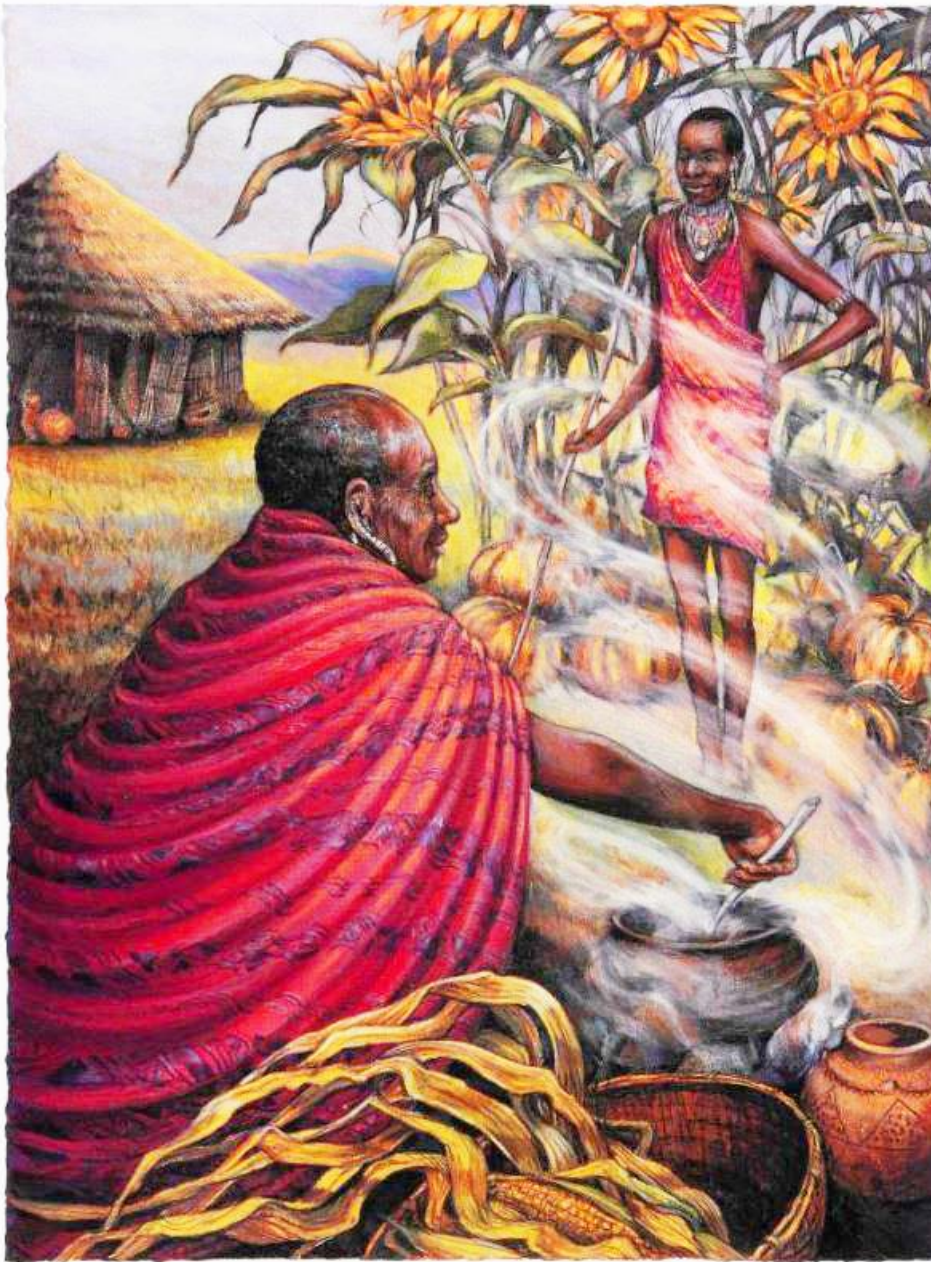
एक शाम चीरोबो रात के खाने के लिए पक रहे शोरबे में कड़छी चला रहा था कि एक अजनबी उसके बाग को निहारने रुका। "आपकी फ़सल तो बेहद खूबसूरत और भरपूर है," अजनबी बरबस बोल पड़ा।

चीरोबो का चेहरा गर्व से दमक उठा। उसने अजनबी से पूछा कि क्या वह बड़ी दूर से आया है। अजनबी ने बताया कि वह शिकार पर निकला है। उसका नाम मूटेये है। उसका गाँव पश्चिम दिशा में आधे दिन के सफ़र की दूरी पर है।

"जब मैं घर लौटूंगा मेरी झोली में मोटे पाखी होंगे," उसने डींग हाँकी। "तब मेरा स्वागत एक ज़बरदस्त शिकारी की तरह होगा।"

"मेरे आँखों की रोशनी गई उसके पहले मैं भी शिकारी था," चीरोबो बोला।

"आओ मेरे पास बैठो, यह बढ़िया शोरबा खाओ। अपने पास आपस में बतियाने को बहुत कुछ होगा।"

मूटेये ने बखुशी न्यौता स्वीकारा और वहीं चूल्हे के पास बैठ गया। दोनों घंटों किस्से सुनते-सुनाते रहे, हंसते और गाते रहे।
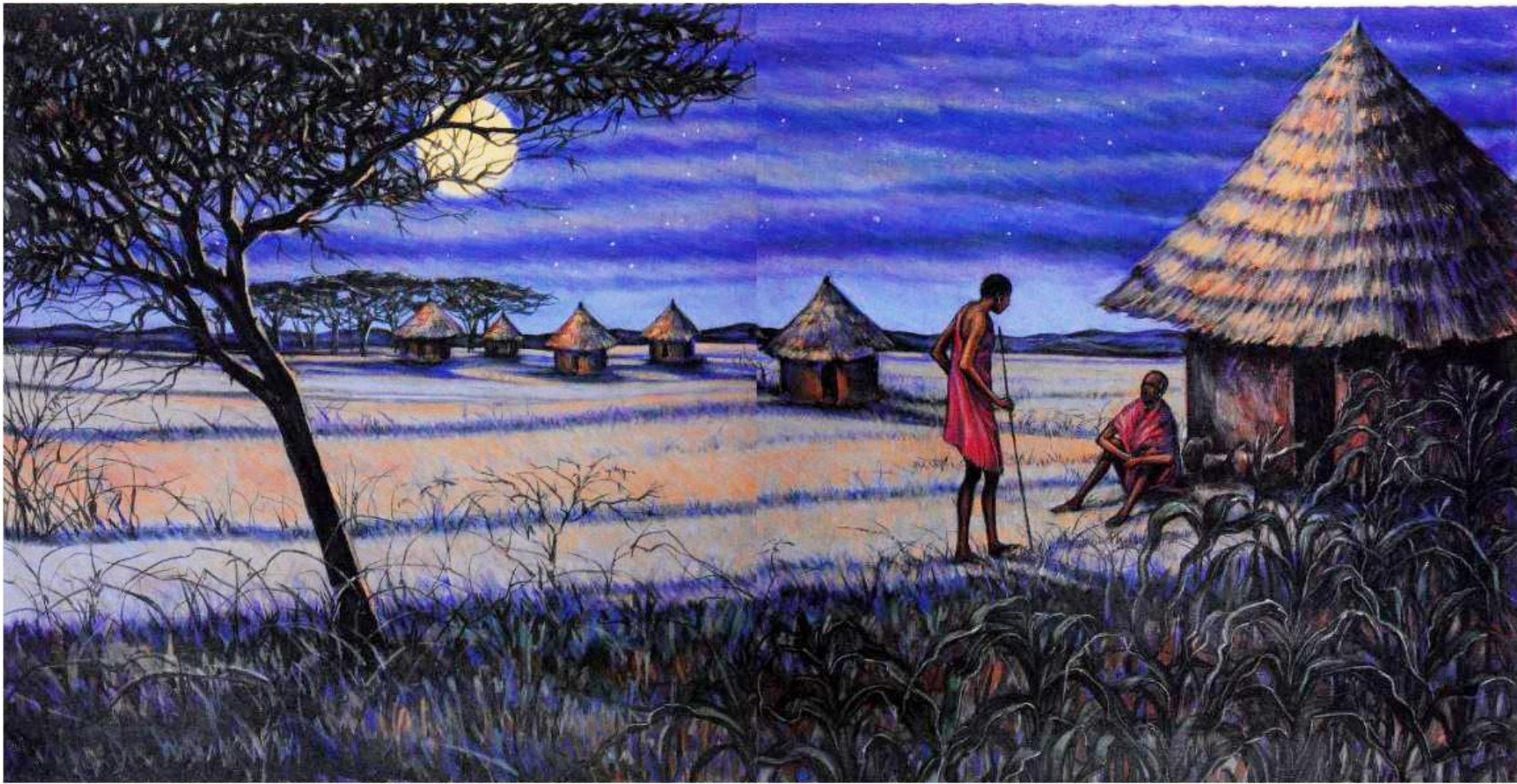
जब चाँद दूर पेड़ों के ऊपर चढ़ आया, वह नौजवान उठ खड़ा हुआ।

''शुक्रिया मेरे दोस्त, मेहरबानी के लिए शुक्रिया,'' वह बोला। ''क्या मैं बदले में तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ?''

चीरोबो कुछ पल चुप रहा। ''अगर मैं तुम्हारे साथ शिकार पर जा सकता तो मुझे बेहद खुशी होती,'' उसने जवाब में कहा।

नौजवान हंसा और बोला, ''जो इन्सान देख ही नहीं सकता मैं उसके साथ शिकार नहीं कर सकता।''

''पर मैं कतई परेशान नहीं करुंगा,'' चीरोबो ने भरोसा दिलाया। ''और फिर मैं दूसरे तरीकों से देख सकता हूँ।''

''तो ठीक है,'' नौजवान मूटेये ने कहा। ''कल सुबह जब सूरज उठेगा, हम शिकार पर निकल पडेंगे। मैं अपने फंदों में से एक तुम्हें दे दूंगा। जो कुछ उसमें फंसेगा उसे तुम रख लेना।''

अगले दिन पौ फटते ही दोनों जंगल को निकल पड़े। नौजवान राह दिखा रहा था। उसने एक लम्बी, सीधी, चलने वाली छड़ी का एक सिरा पकड़ रखा था। उसके पीछे अन्धा चीरोबो था, जो छड़ी का दूसरा सिरा थामे था। वे एक संकरे रास्ते पर चल रहे थे जो पेड़ों के झुरमुटों के बीच बलखाता गुज़र रहा था।
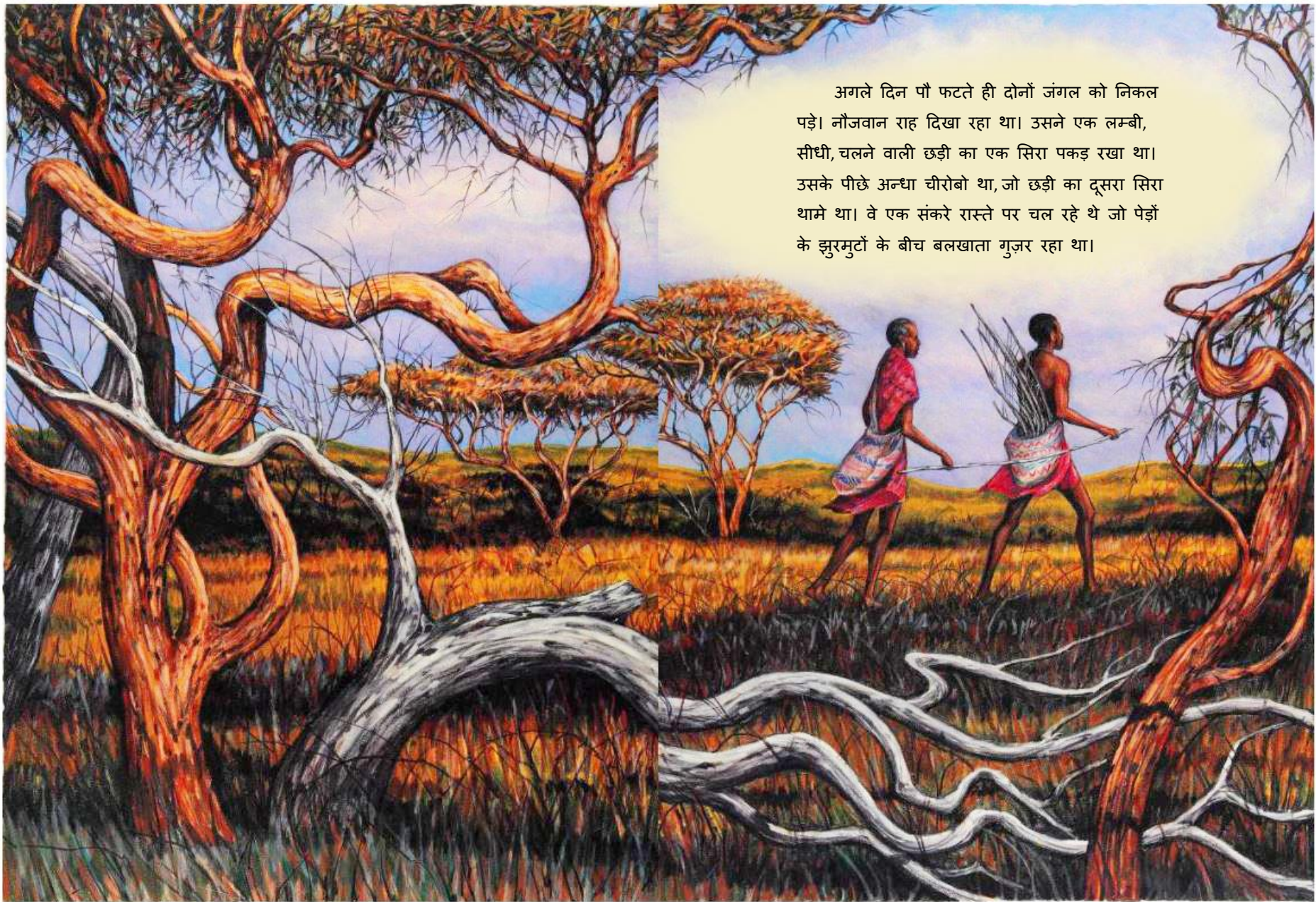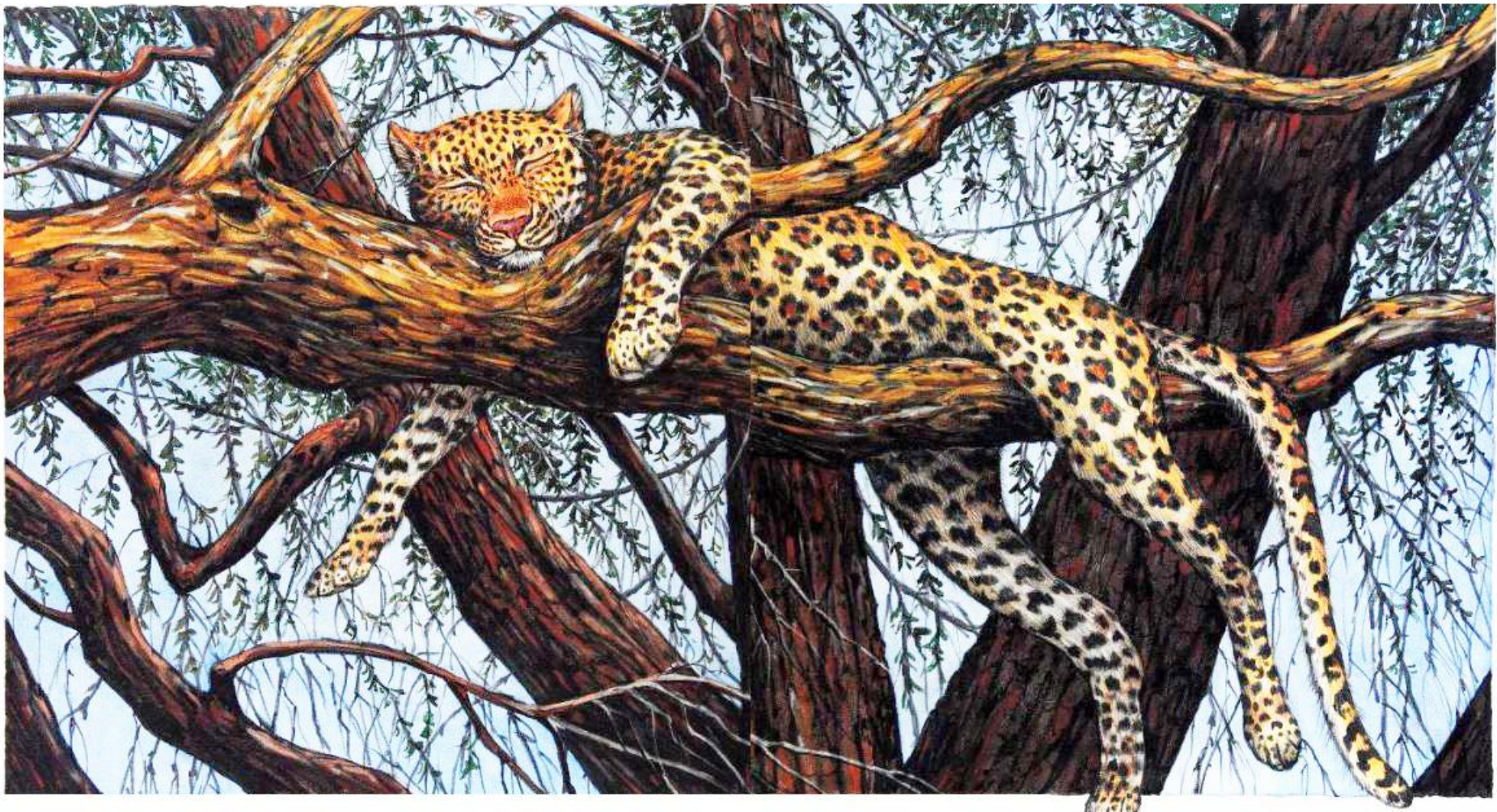
अचानक चीरोबो ने छड़ी खींची। वह पत्थर के बुत-सा स्थिर खड़ा हो गया, उसके हाथ उसके कानों के पीछे थे। "सावधान रहना होगा हमें," वह फुसफुसाया। "आस-पास ही एक तेंदुआ है।"

मूटेये ने चारो ओर नज़र दौड़ाई, पर तेंदुआ कहीं न दिखा। पर जैसे उसकी आँखें ऊपर को उठीं उसे पेड़ के पत्तों के बीच एक अजीब नमूना दिखा।

जिस पगडंडी पर वे खड़े थे उसके ठीक ऊपर बबूल की एक शाखा पर एक बड़ा-सा तेंदुआ लिपटा सो रहा था।

जब दोनों उस सोते जानवर को पीछे छोड़ पूरी तरह महफ़ूज़ आगे निकल आए मूटेये ने पूछा, "जो इन्सान हमेशा अंधेरे में जीता है, उसे यह पता कैसे लगा कि आस-पास तेंदुआ है?"

चिरोबो ने सीधा-सरल जवाब दिया, "मैं अपने कानों से देखना जानता हूँ।"

दोनों अब बिना बोले घने जंगल में आगे बढ़ते गए, जहाँ ठण्डी हवाओं में कलकल बहती धारा की गूँज थी। चीरोबो ने फिर से छड़ी को झटका लगाया और रुक गया। उसने अपनी गरदन एक ओर झुकाई और एक गहरी साँस खींची।

''हमें एहतियात बरतनी होगी,'' उसने चेताया। ''जंगली सूअरों का एक झुण्ड आस-पास ही है।''

नौजवान ने चारों ओर नज़र दोड़ाई, पर उसे कुछ भी नज़र न आया।

सो वह पास की पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा और नीचे झाँका। जंगली सूअरों के एक झुण्ड को गुज़रते देख वह भौंचक रह गया। उनके नुकीले दाँत दोपहरी की धूप में दमक रहे थे।

जब दोनों शिकारी सुरक्षित आगे निकल गए, मूटेये ने पूछा, ''हमेशा अंधेरे में रहने वाले इन्सान को यह कैसे पता चला कि आस-पास जंगली सूअर हैं?''

चीरोबो मुस्कुराया और सिर्फ़ इतना बोला, ''मैं अपनी नाक से देखना जानता हूँ।''
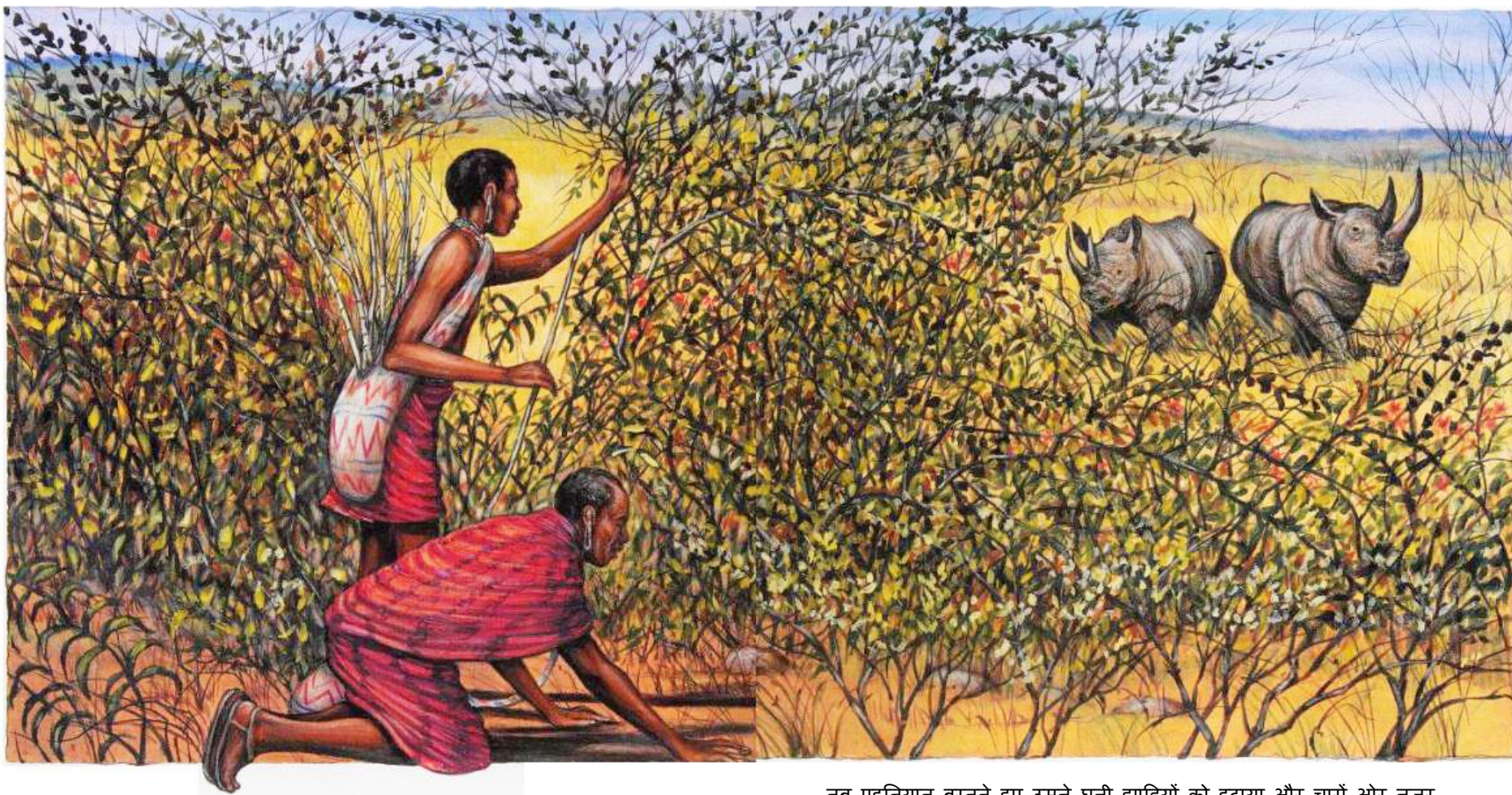
अब वे उस चौड़ी वादी में बढ़ रहे थे जो कंटीली झाड़ियों और फूलों की खुशबू से भरी थी। कुछ देर चलने के बाद चीरोबो ने फिर से छड़ी को झटक कर खींचा और रुक गया। उसने अपने पैर कुछ चौड़े किए और घुटने धरती पर टेक दिए। तब उसने अपनी दोनों हथेलियाँ ज़मीन पर रखीं।

''हमें ख़बरदार रहना होगा, गेंडे इसी तरफ़ आ रहे हैं।''

मुटेये ने इधर-उधर की झाड़ियों को ध्यान से देखा। उसे कोई गेंडे न दिखे।

तब एहतियात बरतते हुए उसने घनी झाड़ियों को हटाया और चारों ओर नज़र दौड़ाई। अचानक उसने लम्बी घास को कुचलते चले आ रहे गैंडो के एक जोड़े को देखा।

जब दोनों शिकारी उन भीमकाय जानवरों से बच आगे बढ़ गए, नौजवान मूटेये अपने दोस्त की ओर मुड़ा। उसने पूछा, ''जो इन्सान अंधेरे में रहता है उसे यह पता भला कैसे लगा कि गैंडे आ रहे हैं।''

चीरोबो ने शान्ति से जवाब दिया, ''मैं अपनी चमड़ी के सहारे देख सकता हूँ।''
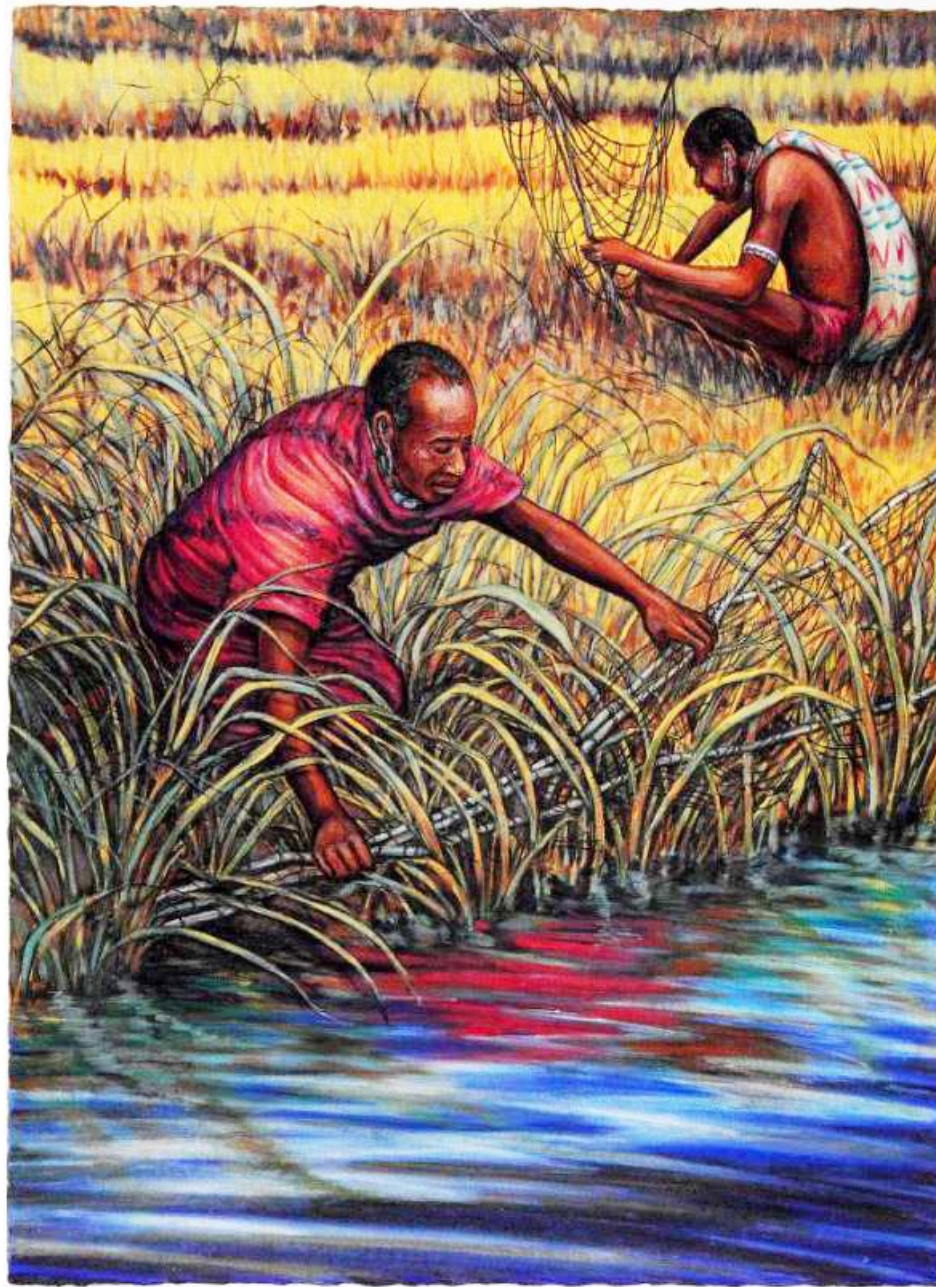
दोनों साथ-साथ वादी में आगे बढते रहे जब तक वे एक उथले तालाब के पास न पहुँच गए।

"पक्षी यहाँ पानी पीने आते हैं," मूटेये ने कहा। "अपने फंदे लगाने के लिए यह जगह अच्छी है।"

अपने दोस्त का कहा मान चीरोबो ने अपना फंदा तालाब के किनारे लगाया, जबकि मूटेये ने अपना फंदा उससे कुछ दूर लगा दिया। फंदों को ठीक से छिपाने के बाद नौजवान बोला, "हम रात को पास ही रुकेंगे और कल सुबह यहाँ लौटेंगे। तब पता चलेगा कि हमने क्या पकड़ा है।"

उस रात दोनों ने जी भर कर बातें कीं। मूटेये अन्धे चीरोबो की अक्लमन्दी का मुरीद बन गया। उसने तमाम ऐसे सवाल पूछे जो एक अर्से से उसके मन में उठते रहे थे।
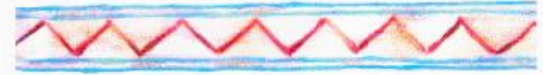
अगली सुबह वे जल्दी ही, तालाब किनारे शिकार की जगह पहुँचे। चीरोबो को फ़ौरन पता चल गया कि वे सफल रहे हैं। वह खुश हो चीखा, ''हमारे फंदों में पाखी हैं। मैं उन्हें सुन पा रहा हूँ।''

मूटेये ने पहले अपना फंदा देखा। उसने पाया कि उसमें एक छोटी-सी बटेर फंसी थी। उसे निराशा तो हुई, पर उसने सावधानी से बटेर को निकाल बकरी की खाल से बने अपने झोले में डाल लिया। तब वह दूसरे फंदे को देखने गया।

घुटने टेक नीचे देखने पर उसका दिल डाह से भर उठा। अन्धे के फंदे में एक बड़ी सारी बत्तख थी। इतनी मोटी कि किसी भूखे सियार का पेट अच्छे से भर जाए।
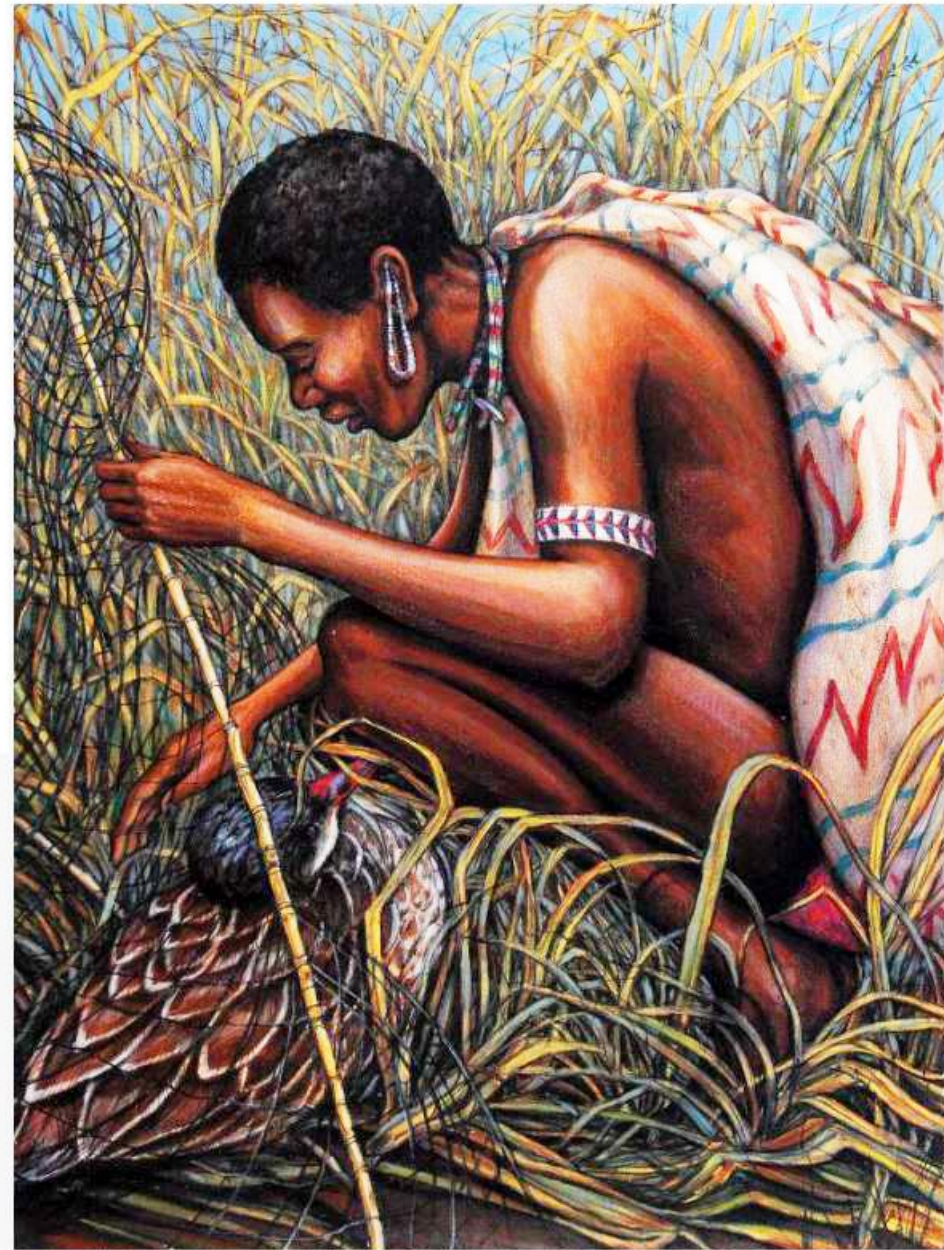
मूटेये कुछ पल झिझका, पर तब दोनों पक्षियों को देख सोचने लगा, ''अंधेरे में रहने वाले इन्सान को भला यह कैसे पता चलेगा कि उसका पाखी कौन सा है?''

मन पक्का कर उसने जल्दी से अपनी दुबली-पतली बटेर की जगह मोटी बत्तख रख ली।

''तुम्हारी चिड़िया दोनों में बड़ी है,'' उसने चिरोबो को बटेर पकड़ाते कहा। ''लज़ीज़ खाना बनेगा इसका।''

चीरोबो ने बटेर के डैन सहलाए। कुछ सोचते हुए अपनी उंगली उसकी हड़ियल पीठ और छाती पर फिराई। तब बिना कुछ बोले उसे अपनी झोली में धर लिया।

दोनों शिकारियों ने फंदे समेटे और गाँव की ओर लौट चले।
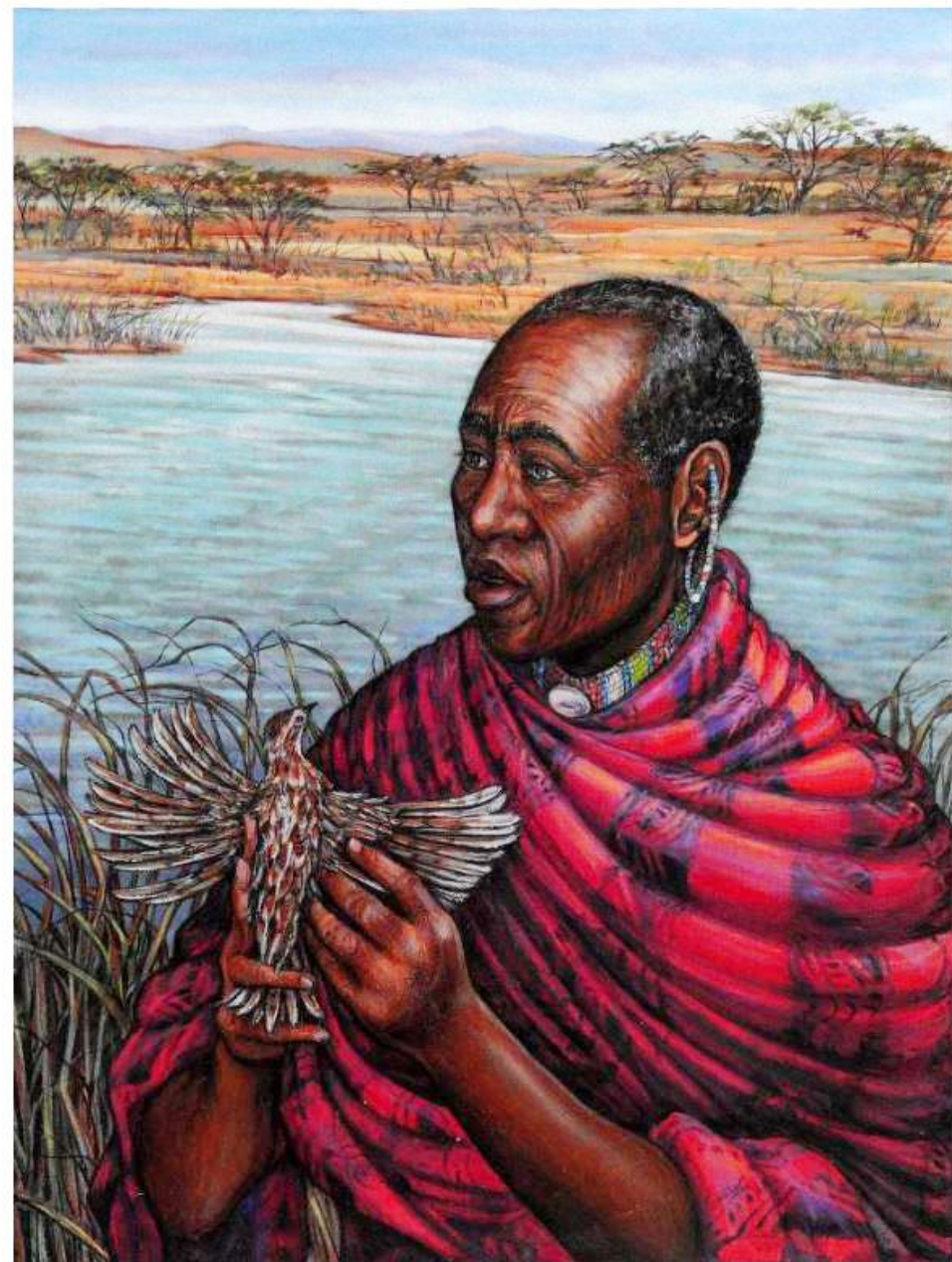
वे तब तक चुपचाप चलते-बढ़ते गए, जब तक वे एक पुराने बाओबाब वृक्ष के नीचे सुस्ताने न रुके। मूटेये पिछली रात की बातचीत जारी रखने को बेताब था। सो मौका पाते ही अपने दोस्त से वह सवाल पूछा जो उसे बचपन से परेशान करता रहा था।

''लोग आपस में लड़ते भला क्यों हैं?'' उसने जानना चाहा।

चीरोबो ने जवाब पर देर तक सोचा। आख़िरकार उसने बोलना शुरू किया। उसकी आवाज़ में अफ़सोस भरा था।

उसने धीमे-धीमे कहा, ''लोग आपस में इसलिए लड़ते हैं क्योंकि वे एक-दूसरे से वह ले लेते हैं जो दरअसल उनका है ही नहीं। जैसा तुमने मेरे साथ किया।''

चीरोबो का जवाब सुन मूटेये सन्न रह गया। उसने बोलने की कोशिश की पर शब्द उसके गले में अटक कर रह गए। शर्म में डूब उसने अपने झोले से बत्तख निकाली और चीरोबो के हाथों में धर दी।

तब डूबते सुर मे पूछा, ''एक बेरहम इन्सान अपने दोस्त की माफ़ी कैसे पा सकता है?''
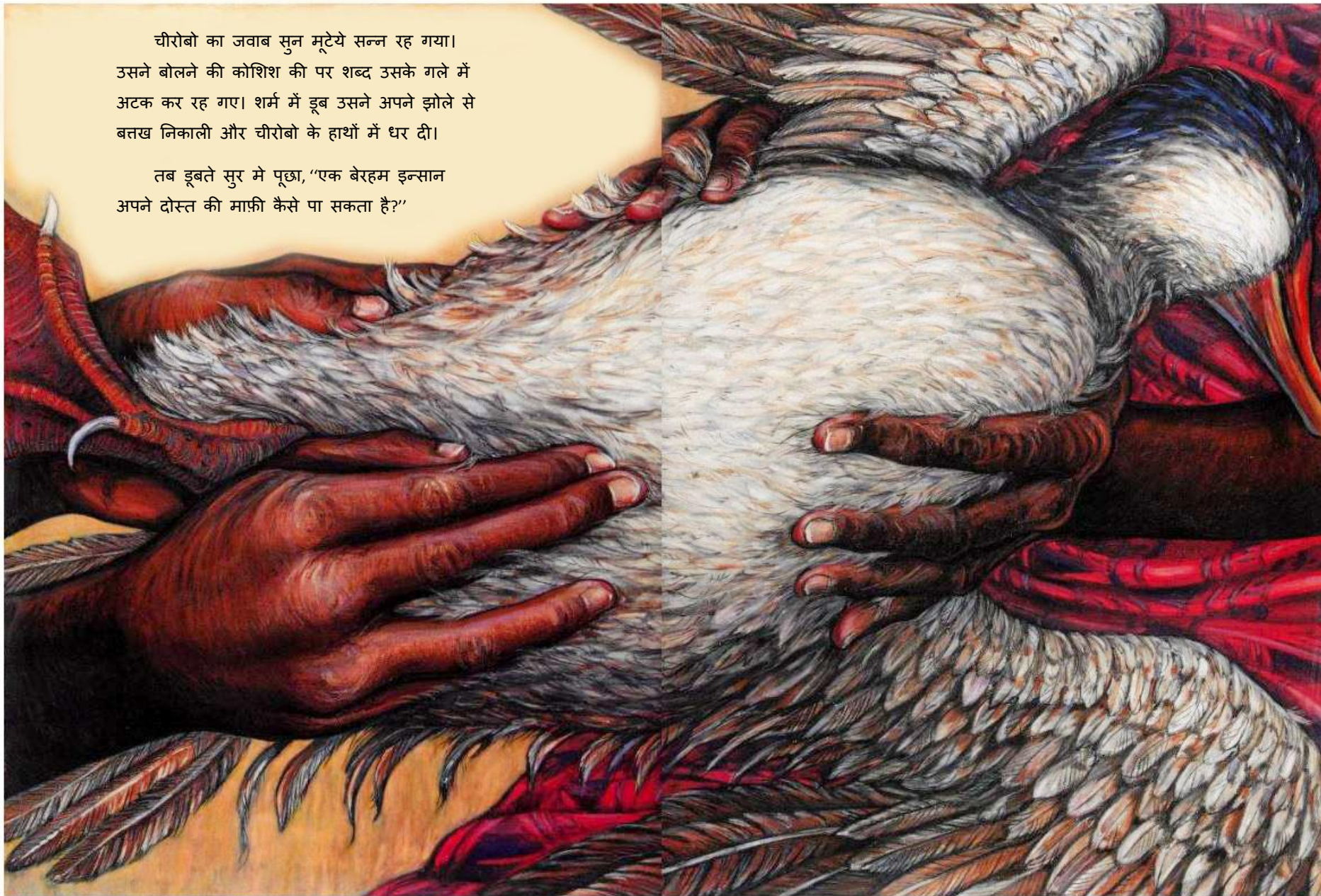
चीरोबो की जोतहीन आँखों ने मानो नौजवान शिकारी की आत्मा में झाँका। वह बोला, ''अपने दिल से देखना सीख कर, जैसा तुमने अभी-अभी मेरे साथ किया।'